मेरे नाथ !

स्वामी श्री अखण्डानन्द जी सरस्वती के

स्वामी श्री शरणानन्द जी महाराज के प्रति विचार –

हमने स्वयं देखा और अपने कानों से सुना कि कोई कैसा भी प्रश्न करे, वे तत्काल उस प्रश्न का निरसन कर देते थे | उनकी सूझ-बूझ इतनी प्रखर थी के वे प्रश्न के शब्द सुनते ही समझ जाते थे कि प्रश्नकर्ता किस नासमझी या भूल के कारण यह प्रश्न कर रहा है | तत्क्षण वे उस पर चोट करते और प्रश्न ही कट जाया करता था | किसी का तर्क-वितर्क उनके समक्ष टिक नहीं पाता था | इसके साथ ही साथ उनका ह्रदय इतना भावपूर्ण एवं कोमल था कि भगवच्चर्चा करते-करते वे भावमग्न हो जाते और नेत्रों से अश्रुधारा का प्रवाह एवं कण्ठ गद्गद हो जाया करता था | उनकी वाणी का स्वर ही बदल जाता था |

एक बार स्वामी शरणानन्द जी महाराज सेठ श्री जय दयाल जी के सत्संग में स्वर्गाश्रम (ऋषिकेश) आये | उनकी भाषा विलक्षण थी | उसको ग्रहण करने के लिए पहले-पहल कई दिन तक सुनना पड़ता था | स्वामी श्री रामसुखदास जी के साथ उनका विचार-विमर्श होता था | वे जब नये-नये शब्दों का प्रयोग करते तो पहले कुछ अदभुत सा लगता, बादमें विचार करने पर प्राचीन शास्त्रों के साथ उसकी संगति लग जाया करती थी |

श्री रामसुखदास जी ने मुझे बताया कि स्वामी शरणानन्द जी का चिन्तन बहुत ही गम्भीर एवं सूक्ष्म है | प्रत्येक बात को वे स्वयं चिन्तन के द्वारा अपनी भाषा में अभिव्यक्ति देते है |

Morari Bapu - Manas Surdhenu Katha - Govardhan - Date : 20/11/2012 ka yah video recording hai.

http://youtu.be/C4MFRhRPM6I

शरणानन्दजी महाराज इतने बड़े दार्शनिक, कि उसके लिये अखंडानन्द सरस्वती महाराज ने जो अभिप्राय दिया,शरणानन्दजी के बारे में । अखंडानन्द सरस्वतीजी ने कहा कि शरणानन्दजी के लिये मैं एक ही अभिप्राय दूँ कि मिलावट वाला वेदान्त सुनना है तो हमारे पास आओ और शुद्ध वेदान्त सुनना है तो शरणानन्दजी के पास जाओ ! अब अखंडानन्दजी निवेदन करें साहब! एक-एक सत्ता बोल रही हैं, एक अधिकार बोल रहा है । सभी शास्त्रों पर जिसका अधिकार है । ये एक बहुत अच्छी बात बोली कि मिलावट वाला वेदान्त सुनना है तो हमारे पास आओ और शुद्ध, विशुद्ध, दो टूक वेदान्त सुनना है तो स्वामी शरणानन्दजी के पास जाओ !